January 2025

Monthly Magazine
Year 11 Issue 1

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार

In Giving We Believe

सतयुग

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

वुधवार सतसंग

प्रत्येक वुधवार प्रात ११ वजे से ११.३० वजे तक

फेसवुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसवुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्घोष जहाँ
राम राम मधुर धुन वहाँ
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,
जीवन में लाता सबके जो बहार
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
हमारा एन.आर.एस.पी., प्यारा एन.आर.एस.पी.
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता
परोपकार का भाव जगाता
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता
सत को करता अंगीकार
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुस्कान के राज बताता,
तन, मन, धन से देना सिखलाता
हमको जीना सिखलाता
घर-घर प्रेम के दीप जलाता
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
एन.आर.एस.पी.,एन.आर.एस.पी.

।। 卐 ।।

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,

।। नारायण नारायण ।।

प्रयागराज इलाहाबाद में चल रहे कुम्भ महोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ ।

कुंभ मेला हमारी संस्कृति का एक अभिन्न अंग है । कुंभ मेला क्यों मनाया जाता है ? क्या लाभ हैं ? कब से मनाया जाता है? इसकी विस्तृत जानकारी आप सतयुग के आगे के पन्नों में पढ़ेंगे । कुंभ केवल एक धार्मिक मेला नहीं बल्कि आत्मशुद्धि, आध्यात्मिक उन्नति और मोक्ष प्राप्ति की एक महत्वपूर्ण यात्रा है । यह एक ऐसा अवसर है जहां मनुष्य सांसारिक जीवन की आसक्ति में विरक्ति ढूँढता हुआ आत्मसाक्षात्कार और परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है ।

ब्रह्म मुहूर्त में जब हम मानसिक कुंभ स्नान करते हैं तो बड़ी तादात में जुड़े सत्संगी एक साथ सामूहिक स्नान के वाइब्रेशन उत्पन्न करते हैं तो इन किरणों में इतनी शक्ति इतनी ऊर्जा उत्पन्न हो जाती है कि वह साक्षात कुंभ स्नान का लाभ देती है ।

कुंभ मेले की शुरुआत समुद्र मंथन से निकले कुंभ से जुड़ी है । यदि हम इस ऐतिहासिक कथा पर विचार करें तो पायेंगे कि यह कथा हमें सीख देती है कि यदि आप विपरीत परिस्थितियों में घिरे हैं तब अपने कुंभ रूपी मस्तिष्क का मंथन करें, विचार करें। जब हम मंथन करते हैं, मौन रहते हैं तो सबसे पहले नकारात्मक विचार दूर होते हैं और फिर आहिस्ते आहिस्ते सकारात्मक विचार बनने लगते हैं । इसी तरह किसी भी कार्य की शुरुआत में कई दिक्कतें आती हैं काम करते समय समुद्र मंथन से निकले रत्नों की तरह कई पड़ाव आते हैं, कभी असफलता कभी सफलता। पर यदि हम निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं तो अंत में मन रूपी कुंभ से अमृत यानी अपने लक्ष्य पर पहुँच जाते हैं और लक्ष्य प्राप्ति की अनुभूति कुंभ स्नान की अनुभूति से कम नहीं होती ।

कुंभ महापर्व से हमें यह सीख लेनी है कि विपरीत परिस्थितियों में मन रूपी कुंभ का मंथन करें ताकि नकारात्मकता निकल जाये और आप सकारात्मकता से भर जायें ।

शेष कुशल

R. Modi

-: संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

-: प्रधान कार्यालय :-

नारायण भवन

टोपीवाला कंपाउंड, स्टेशन रोड़, गोरेगांव (प.), मुंबई

-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	9712945552
अकोला	शोभा अग्रवाल	9423102461
अकोला	रिया अग्रवाल	9075322783
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	9422855590
औरंगाबाद	माधुरी धानुका	7040666999
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	7045724921
बैंगलोर	शुभांगीं अग्रवाल	9327784837
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9341402211
बस्ती	पूनम गाड़िया	9839582411
बिहार	पूनम दूधानी	9431160611
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	8947036241
भोपाल	रेनू गट्टानी	9826377979
चेन्नई	निर्मला चौधरी	9380111170
दिल्ली (नोएडा)	तरुण चण्डक	9560338327
दिल्ली (नोएडा)	मेघा गुप्ता	9968696600
दिल्ली (डब्ल्यू)	रेनु विज	9899277422
धुलिया	रेणु भटवाल	878571680
गोंदिया	पूजा अग्रवाल	9326811588
गोहटी	सरला लाहोटी	9435042637
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	9247819681
इंदौर	धनश्री शिरालकर	9324799502
जालना	रजनी अग्रवाल	8888882666
जलगांव	काला अग्रवाल	9325038277
जयपुर	प्रीति शर्मा	9461046537
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
झुनझुनू	पुष्पा देवी टिबेरेवाल	9694966254
इचलकरंजी	जय प्रकाश गोयनका	9422043578
कोल्हापुर	राधिका कुमटेकर	9518980632
कोलकत्ता	स्वेटा केडिया	9831543533
कानपुर	नीलम अग्रवाल	9956359597
लातूर	ज्योति भूतड़ा	9657656991
मालेगांव	रेखा गारोडिया	9595659042
मालेगांव	आरती चौधरी	9673519641
मोरबी	कल्पना चोरौड़िया	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	9373101818
नांदेड़	चेदा काबरा	9422415436
नवलगढ़	ममता सिंग्रोडिया	9460844144
नासिक	सुनीता अग्रवाल	9892344435
पुणे	आभा चौधरी	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	9434012619
परतवाड़ा	राखी मनीष अग्रवाल	9763263911
रायपुर	अदिति अग्रवाल	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	9431115477
सूरत	रंजना अग्रवाल	9328199171
सांगली	हेमा मंत्री	9403571677
सिकर (राजस्थान)	सुषमा अग्रवाल	9320066700
श्री गंगानगर	मधु त्रिवेदी	9468881560
सतारा	नीलम कदम	9923557133
शोलापुर	सुवर्णा बलदवा	9561414443
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुधरा	9564025556
टाटा नगर	उमा अग्रवाल	9642556770
राउरकेला	उमा अग्रवाल	9776890000
उदयपुर	गुणवंती गोयल	9223563020
उबली	पल्लवी मलानी	9901382572
वाराणसी	अनीता भालोटिया	9918388543
विजयवाड़ा	किरण झँवर	9703933740
वर्धा	रूपा सिंघानिया	9833538222
विशाखापतनम	मंजू गुप्ता	9848936660
गुडगाँव	मेघा गुप्ता	9968696600
यवतमाल	वंदना सूचक	932521889

अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का नाम

ऑस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
दुबई	विमला पोद्दार	+971528371106
काठमांडू	रिचा केडिया	+977985-1132261
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
शारजाह	शिल्पा मंजरे	+971501752655
बैंकॉक	गायत्री अग्रवाल	66952479920
विराटनगर	मंजू अग्रवाल	+977980-2792005
विराटनगर	वंदना गोयल	+977984-2377821

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

।। नारायण नारायण ।।

पिछले १५ दिनों, से जिसे देखो वो कुंभ स्नान के लिए प्रयागराज जा रहा है । कुंभ यूँ तो हर १२ वें साल पर होता है पर कभी भी इसकी इतनी चर्चा होते नहीं सुनी जितनी चर्चा इस बार के कुंभ की हो रही है । टीम सतयुग ने अपनी इस उत्कंठा को संतुष्टि प्रदान करने के लिए यह विचार किया कि इस बार सतयुग का अंक कुंभ आधारित किया जाये और टीम जुट गई इस प्रयास में और अब पहुँच रहा है यह अंक कुंभ की विस्तृत जानकारी लेकर आप सभी के सामने ।

आप सभी कुंभ स्नान का लाभ लेंगे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ -

आपकी अपनी
संध्या गुप्ता

अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

अमेरिका

सिंसिनाती	मेघा अग्रवाल	+1(516)312-4189
कनेक्टिकट	ऊष्मा जोशी	
फ्लोरिडा	बीना पटेल	+1(904)343-9056
शिकागो	चाँदनी ठक्कर	+12247700252
केलिफ़ोर्निया	सुशीला तयाल	+12247700252
न्यू जर्सी	शैली अग्रवाल	+912012842586

we are on net

narayanreikisatsangparivar @narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.
Call : 022-67847777

||नारायण नारायण||

सतयुग का शंखनाद

'कुंभ' शब्द का अर्थ संस्कृत में 'घड़ा' या 'कलश' होता है, जो जीवन, ज्ञान, समृद्धि, आध्यात्मिकता और अमरत्व का प्रतीक है। यह शब्द ज्योतिष, धर्म, वास्तुशास्त्र, पौराणिक कथाओं और भारतीय परंपराओं में विशेष स्थान रखता है। कुंभ का मतलब होता है घड़ा । कुंभ केवल एक साधारण शब्द नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, धर्म, इतिहास और आध्यात्मिकता का गहरा प्रतीक है। यह ज्ञान, ऊर्जा, अमृत, और धर्म का प्रतिरूप है।

दरअसल, कुंभ मेले की शुरुआत एक पौराणिक कहानी से हुई है। पौराणिक कहानी के अनुसार, एक बार देवताओं और राक्षसों के बीच समुद्र मंथन हुआ। हुआ यह कि, ऋषि दुर्वासा ने देवताओं को श्राप दिया था, जिससे वे कमज़ोर हो गए। राक्षसों ने इसका फायदा उठाकर देवताओं को हरा दिया। जिसके बाद सभी देवता भगवान विष्णु के पास मदद मांगने गए। भगवान विष्णु ने कहा कि अमृत पाने के लिए समुद्र मंथन करना होगा। अमृत, यानी ऐसा अमर पेय जो पीने से देवता फिर से ताकतवर हो जाएंगे। अब देवताओं ने राक्षसों को मना लिया कि चलो, मिलकर समुद्र मंथन करते हैं। राक्षस भी अमृत के लालच में तैयार हो गए।

जब समुद्र मंथन हुआ, तो कई चीजें निकलीं – जैसे कामधेनु गाय, विष और आखिर में अमृत का कलश। जैसे ही अमृत कलश निकला, राक्षस और देवता दोनों उसे पाने के लिए झगड़ने लगे। इस बीच भगवान इंद्र के बेटे जयंत ने अमृत कलश उठाया और वहां से भाग गए। अब राक्षसों ने जयंत का पीछा किया। इस दौरान १२ दिनों तक देवताओं और राक्षसों के बीच लड़ाई चली। जयंत अमृत कलश को लेकर भागते रहे थे और इसी दौरान अमृत की कुछ बूंदें पृथ्वी के चार स्थानों,

१.हरिद्वार में गंगा :- गंगा नदी हरिद्वार से ही मैदानी इलाकों में उतरती हैं। मान्यता है कि यहाँ गंगा नदी अमृत तुल्य है ।

२.प्रयागराज (इलाहाबाद) :- गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर प्रयाग में त्रिवेणी ।य हाँ गंगा यमुना और सरस्वती का संगम माना जाता है इसलिए यहाँ का जल महा अमृत के समान है।

३ उज्जैन में शिप्रा :- यहाँ शिप्रा नदी उत्तर दिशा की ओर बहती है । ठीक उसी तरह जैसे बनारस में गंगा उत्तर की ओर बहती है ।

४.नासिक में गोदावरी :- यहाँ दक्षिण की गंगा कही जाने वाली गोदावरी का अरुणा और वरुणा से संगम होता है।

इसलिए इन जगहों को पवित्र माना जाता है और यहां कुंभ मेले का आयोजन होता है। दन्तकथा के अनुसार जयंत को कलश चुराने और इसे दानवों से बचाने में बृहस्पति को १२ दिन लग गए थे । देवताओं का एक दिन इंसानों के एक साल के बराबर होता है इसलिए महाकुंभ १२ साल में एक बार मनाया जाता है।

कुंभ मेलों के प्रकार

दरअसल, कुंभ १२ होते हैं, जिनमें से ४ कुंभ का धरती पर और ८ कुंभ का देवलोक में आयोजन होता है । इससे पहले साल २०१३ में पूर्ण महाकुंभ का आयोजन हुआ था।

पूर्ण कुंभ मेला - पूर्ण कुंभ मेले का आयोजन १२ साल में होता है और यह मेला भारत के ४ स्थानों प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में लगता है। हर १२ साल के अंतराल पर चारों कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। १२ पूर्णकुंभ होने पर यह महाकुंभ कहलाता है, इसीलिए प्रयागराज में इस बार लग रहे कुंभ मेले को महाकुंभ का नाम दिया गया है । इससे साफ है कि किसी भी इंसान की जिंदगी में सिर्फ एक ही बार महाकुंभ नहाने का पुण्य मिल सकता है।

इस साल प्रयागराज इलाहाबाद में १४४ साल के बाद पूर्ण कुंभ का आयोजन किया गया है ।

अर्ध कुंभ मेला

अर्ध कुंभ मेले का अर्थ है आधा कुंभ मेला। यह मेला हर ६ साल में दो स्थानों प्रयागराज और हरिद्वार में लगता है।

कुंभ मेला

कुंभ मेले का आयोजन चार अलग-अलग स्थानों पर हर तीसरे साल आयोजित किया जाता है।

माघ कुंभ मेला

हर साल माघ महीने में माघ कुंभ मेले का आयोजन प्रयागराज में किया जाता है।

सिंहस्थ कुंभ

सिंहस्थ कुंभ का संबंध सिंह राशि से है। सिंह राशि में बृहस्पति और मेष राशि में सूर्य के गोचर करने पर उज्जैन में सिंहस्थ कुंभ का आयोजन होता है।

कुंभ मेले के लिए कैसे होता है स्थान का चयन: कुंभ मेले का स्थान तय करने में ग्रहों की दशा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ज्योतिषी गणना के अनुसार जब बृहस्पति ग्रह मेष राशि या सिंह राशि में प्रवेश करता है और सूर्य-चंद्रमा की स्थिति विशेष योग बनाती है, तब कुंभ मेले का आयोजन होता है। माना जाता है कि ग्रहों की यह स्थिति १२ पर आती है, इसलिए १२ साल में कुंभ मेले का आयोजन होता है।

जब **बृहस्पति कुंभ राशि में प्रवेश करता है** और सूर्य व चंद्रमा क्रमशः मेष और धनु राशि में प्रवेश करते हैं, तो कुंभ **हरिद्वार** में आयोजित किया जाता है। जब **बृहस्पति सिंह राशि चक्र** में और सूर्य व चंद्रमा कर्क राशि में प्रवेश करते हैं, तो कुंभ **नासिक और त्र्यंबकेश्वर** में आयोजित किया जाता है।

जब **बृहस्पति वृषभ राशि** में होता है और सूर्य व चंद्रमा मकर राशि में होते हैं, तो कुंभ **प्रयागराज** में आयोजित किया जाता है।

जब **सूर्य सिंह राशि और बृहस्पति ग्रह भी सिंह राशि में होते हैं,** तो कुंभ मेला **उज्जैन** में होता है।

प्रयागराज : संगम नगरी यानी उत्तर प्रदेश का प्रयागराज जिला, जहां इस बार महाकुंभ २०२५, १३ जनवरी से शुरू होकर २६ फरवरी तक चलेगा । इसमें देश-विदेश से ४० से ४५ करोड़ श्रद्धालुओं के आने का अनुमान है ।

कुंभ का आध्यात्मिक महत्व बहुत गहरा और व्यापक है । यह न केवल हिंदू धर्म का एक प्रमुख धार्मिक उत्सव है, बल्कि आत्मशुद्धि, आध्यात्मिक जागरण और मोक्ष प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण साधन भी माना जाता है ।

कुंभ के आध्यात्मिक महत्व के प्रमुख पहलू :

कुंभ में गंगा, यमुना, सरस्वती, क्षिप्रा और गोदावरी जैसी पवित्र नदियों में स्नान को अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है। यह स्नान **पापों से मुक्ति** दिलाने वाला और **आत्मशुद्धि का माध्यम** माना जाता है। कुंभ मेला एक ऐसा अवसर होता है, जब असंख्य संत, महात्मा, योगी और श्रद्धालु एकत्रित होते हैं। इस दौरान किए गए सत्संग, ध्यान, जप और यज्ञ से आध्यात्मिक ऊर्जा का संचय होता है, जिससे **आत्मजागरण** की प्रक्रिया को गति मिलती है ।

कुंभ के दौरान देशभर से अनेक संन्यासी, संत, अखाड़ों के महंत और विद्वान एकत्र होते हैं । उनके **प्रवचन और मार्गदर्शन से आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति** होती है, जिससे जीवन में धर्म और सत्य की दिशा मिलती है। कुंभ मेले में योग और ध्यान शिविरों का आयोजन किया जाता है, जो **आत्मचिंतन, मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति** का मार्ग प्रशस्त करते हैं ।

कुंभ की पारंपरिक अवधारणा धार्मिक, ज्योतिषीय और आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रही है । लेकिन आधुनिक समय में कुंभ का स्वरूप और उसकी परिकल्पना बदल गई है । अब यह केवल एक धार्मिक आयोजन या ज्योतिषीय संकल्पना तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और पर्यटन के दृष्टिकोण से भी देखा जाता है । आज कुंभ आध्यात्मिकता, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, वैज्ञानिक चेतना, और वैश्विक सहयोग का प्रतीक बन चुका है।

आधुनिक युग में कुंभ का बदलता स्वरूप

(क) कुंभ अब केवल धार्मिक आयोजन नहीं

पहले कुंभ मेला मुख्य रूप से हिंदू साधु-संतों, तीर्थयात्रियों और भक्तों के लिए था । अब कुंभ में योग, ध्यान, आध्यात्मिक चर्चाएँ, सांस्कृतिक उत्सव, और वैज्ञानिक सेमिनार भी शामिल होते हैं।

ख) यह विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक सम्मेलन बन गया है। भारतीय संस्कृति और विरासत को विश्व स्तर पर प्रस्तुत करने के लिए कुंभ अब एक वैश्विक मंच बन चुका है । विभिन्न देशों के अध्यात्मिक गुरु,

विद्वान, योगाचार्य और शोधकर्ता इसमें भाग लेते हैं । कला, संगीत, नृत्य और लोक परंपराओं को बढ़ावा दिया जाता है।

(ग) आधुनिक कुंभ में गंगा सफाई अभियान, जैविक खेती, वृक्षारोपण, और जल संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्लास्टिक के उपयोग को कम करने और पर्यावरण को बचाने के लिए सरकार और सामाजिक संगठन मिलकर काम कर रहे हैं।

(घ) अब कुंभ मेले में ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), और डिजिटल मैपिंग जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है। तीर्थयात्रियों के लिए मोबाइल ऐप, वर्चुअल गाइड, और लाइव स्ट्रीमिंग की सुविधाएँ दी जाती हैं।

एन आर एस पी और कुंभ : एन आर अस पी कुंभ का बहुत ही सहज और सरल विश्लेषण देता है । कुंभ यानी घड़ा जब घड़े से कुछ निकालना होता है तो उसमें आपको अपना हाथ डालना होता है । एनआरएसपी का मानना है जब भी आप मन रूपी घड़े के साथ इस जीवन समुद्र में उतरते हैं तो कभी परिस्थितियाँ अनुकूल होंगी कभी प्रतिकूल। जब भी आप प्रतिकूल परिस्थितियों से गुज़रें इस मन रूपी घड़े के भीतर विचारों का मनन करें सकारात्मकता के गोते लगाएँ और एक पवित्र स्वरूप को अंगीकार करें, दूसरों की मदद करें , वाणी का सदुपयोग करें, धीमा और मीठा बोलें और हर पल हर क्षण देने के भाव में रहें और घर बैठे ही कुंभ स्नान का लाभ लें।

कुंभ अब परंपरा और आधुनिकता का संगम बन चुका है, जो दुनिया को शांति, ज्ञान और आध्यात्मिकता का संदेश देता है। कुंभ मेला भारत की **विविधता में एकता** का उदाहरण है, जहाँ विभिन्न संप्रदायों, परंपराओं और आस्थाओं के लोग एक साथ आते हैं। यह **धार्मिक सहिष्णुता** और समाज में समरसता का संदेश देता है। कुंभ एक विशेष खगोलीय संयोग में आयोजित होता है, जब ग्रहों की स्थिति आध्यात्मिक साधना के लिए अत्यंत अनुकूल मानी जाती है। ऐसी मान्यता है कि इस समय किए गए धार्मिक कार्यों का प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। कुंभ केवल एक धार्मिक मेला नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, आध्यात्मिक उन्नति और मोक्ष प्राप्ति की एक महत्वपूर्ण यात्रा है। यह एक ऐसा अवसर है, जहाँ व्यक्ति अपने सांसारिक जीवन से कुछ समय के लिए विरक्त होकर आत्म-साक्षात्कार और परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है।

महेश कुमार हेड़ा को जन्मदिवस (९ जनवरी) पर
सुख, शांति, सेहत, समृद्धि से भरा नारायण आशीर्वाद !

॥ 卐 ॥

ज्ञान मँजूषा

इस बार के ज्ञान मंजूषा स्तंभ में हम हमारे रेडियंट स्टार्स द्वारा आयोजित मीट एंड ग्रीट कार्यक्रम के तहत रेडियंट स्टार्स द्वारा राज दीदी से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लेकर आए हैं।

प्रश्न :- मेरा नाम महर्षि दवे है, मैं एक एक्टर हूं। दीदी मुझे कभी-कभी अपने दोस्तों की बातें सुननी पड़ती है। वे लोग कई गलत और नकारात्मक शब्दों का इस्तेमाल करते हैं लेकिन मैं उनसे कुछ कह नहीं सकता क्योंकि उनमें से कुछ लोग उस स्थिति में विश्वास नहीं रखते हैं तो उनके प्रति मेरा क्या कार्य होना चाहिए?

दीदी : हम NRSP हैं और हमको शब्दों का और action का महत्व मालूम है कि 'Whatever we give we receive.' शब्दों की ताकत हमें अच्छे से मालूम पड़ गई है कि मज़ाक में भी हमें गलत शब्दों का उच्चारण नहीं करना है। राज दीदी ने कहा कि हम Radiant Stars के experience जानना चाहेंगे जो नकारात्मक शब्दों का प्रभाव जानते हुए भी नकारात्मक शब्दों का इस्तेमाल कर चुके हैं और उसका क्या परिणाम उन्हें भुगतना पड़ा। राज दीदी ने आगे कहा कि हम NRSP ये अच्छे से समझ चुके हैं पर जो लोग NRSP से नहीं जुड़े है वो लोग वैसे ही शब्द बोलते हैं, वैसे ही action करते है और हम जब समझाने जाते हैं तो वो उल्टा हमें समझाते हैं। ऐसी situation में हमें क्या करना चाहिए !

पहले तो हमें शांत रहना चाहिए, उनके लिए मन ही मन प्रार्थना करनी चाहिए, comment नहीं करना है, चर्चा नहीं करनी है। इसको समझता नहीं है, ऐसा बोलता है, ऐसा करता है, इसका क्या परिणाम होगा यह मालूम नहीं, ये सब आपको चिंतन – मनन नहीं करना है। मन ही मन इतना कहना है कि नारायण इसे सद्बुद्धि दीजिए, ये अच्छा बोले, अच्छा करे निरंतर, निरंतर, निरंतर उसके प्रति आपकी Blessings ही जानी चाहिए, उसके लिए prayers की जानी चाहिए। Is it clear ? कहीं बाहर जाकर चर्चा नहीं करनी है। आपका एक friend है, समझो वो भी NRSP है, आप भी है NRSP है और third person NRSP नहीं है, जो आपका friend है और वो ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करता है पर आप दोनों को उस बारे में चर्चा नहीं करनी है। यदि एक ने चर्चा शुरू कर भी दी तो आप तुरंत बोल दीजिए कि चल उसके लिए प्रार्थना करते हैं कि वो भी NRSP बन जाए और हमारे साथ जुड़ जाएं।

नारायण नारायण दीदी, मेरा नाम वरुण अग्रवाल है। मैं एक Law Final Year Student हूं।

प्रश्न : अगर जन्म कुंडली में लिखा हो कि आपको नारायण नारायण नेचर वाला पार्टनर मिलने वाला है या आपके साथ नारायण नारायण घटना घटने वाली है तो हम उसे भी बदल सकते हैं क्या?

दीदी :- (मुस्कुराते हुए) क्या क्या Question पूछते हैं आप लोग ! आपकी जन्म कुंडली है, उसमें यह लिखा हुआ है कि आपका पार्टनर कैसा होगा। Example हम देंगे, Answer आप लोग देंगे। Suppose किसी Student को Half Yearly Exam में ५०% Marks मिले। हम लोग उस बच्चे के ईर्द – गिर्द हैं और हम यह बात करते हैं कि उसे सिर्फ ५०% मिले। ६ महीने उसके हाथ में थे, यदि उस विद्यार्थी ने उन ६ महीनों में मेहनत की तो Marks बढ़ेंगे कि नहीं बढ़ेंगे ? बच्चा ला सकता है कि नहीं ला सकता है ९८, ९९ या १००% ? किसीने कहा हां

दीदी Marks बढ़ेंगे और वह बच्चा अधिक Marks ला सकता है।

आपके जन्म कुंडली में यह जो लिखा हुआ है कि जीवन साथी ऐसा मिलेगा। आपने Half Yearly Exam के वक्त जो मेहनत की थी ना, ये उसके आधार पर आपकी जन्म कुंडली में लिखा हुआ है। आपको पता चल गया कि यह लिखा हुआ है और आप आगे मेहनत करेंगे, जाप करेंगे, आगे जो अच्छे कर्म करेंगे तो यह परिवर्तित होने की पूरी संभावना है। आपकी जन्म कुंडली में जो लिखा हुआ है वह आपके पिछले कर्मों के आधार पर लिखा हुआ है। अच्छा और नया चाहिए तो आगे अच्छे कर्म करने होंगे। Is it clear ?

देखो आपको इशारा कर दिया उसने कि आपको ऐसा पार्टनर मिलने की संभावना है । आपको ऐसा ही मिलेगा यह आपकी जन्म कुंडली नहीं कहती है। अच्छा है ना कि हमको पहले ही इशारा कर दिया, हमको अच्छे काम करने हैं, विचार, व्यवहार, वाणी को सुधारना है। Simultaneously जैसे ही आपने अपने आप को चेंज किया, अपने आपको को सुधारा तो Automatically आपकी जन्म कुंडली में सुधार आ जाएगा। आपको इसको सुधारने की जरूरत नहीं है। आपने यदि अपने विचार, व्यवहार और वाणी पर काम किया तो जन्म कुंडली में Automatically सुधार आ जाएगा । Clear, Clear एकदम अच्छे से? Very Nice! इसको सबसे पहले समझा, लिफाफा इसके लिए ready रखो, इन सभी के mentors ने इन सब को होशियार कर रखा है।

नारायण नारायण दीदी मेरा नाम अमित दलाल है और मैं Final Year Computer Engineering का Student हूँ, SVKM मुकेश पटेल से।

प्रश्न: मेरा प्रश्न यह है, हम ऐसे परिवार में क्यों पैदा होते हैं, जिसमें हम fit नहीं हो पाते, जीवन में कर्म क्या है ?

दीदी :- आपने कहा है कि हमारा जन्म ऐसे घर में क्यों हुआ या ऐसे परिवार में क्यों हुआ जहाँ पर हम fit नहीं होते हैं? सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि इस धरती पर हमने दूसरों को सुख पहुंचाने के लिए, दूसरों को comfort देने के लिए जन्म लिया है। आपको जैसा comfort और सुख चाहिए वैसा आपको नहीं मिलता है तो आपको लगता है कि मैं इस घर में फिट नहीं हूँ। जब तक मुझे चाहिए, मुझे चाहिए, मुझे चाहिए यह भाव रहेगा, आपसे सुख दूर ही रहने वाला है। जो मेरे साथ रहते हैं, जिनके साथ मैं रहता हूँ, उनको मैं क्या comfort दे सकता हूँ, क्या सुख दे सकती हूँ, जब उस पर आपका फोकस होगा और जब आप देना शुरू करेंगे तो प्रकृति का नियम है यह –'whatever you give you receive.' First you have to give, पहले बीज बोना पड़ता है, फिर आपको फल प्राप्त होते हैं। Direct नहीं मिलता है। जिनके साथ आप रहते हैं, उन्हें जब आप comfort और सुख देना शुरू कर देंगे तो by-product क्या होगा? वो सब कुछ आपके पास आता चला जाएगा। फिर आप बारंबार यह कहेंगे कि इसी परिवार में जन्म लेना है मुझे।

राज दीदी ने आगे कहा और कार्मिक क्या है..?

सीधा सरल उत्तर 'whatever you give, you receive.' यदि आपको अच्छा चाहिए, comfort चाहिए, सुख चाहिए, शांति चाहिए then you have to give. आप यहाँ पर जिस घर में भी पैदा हुए हैं दूसरों को सुख देने के लिए हुए हैं, वो बात अलग है कि इसका By-product आपके पास सुख के रूप में लौट कर आएगा लेकिन पहले आपको देना है और जब देना शुरू कर दोगे अपने आप fit होते चले जाओगे और इतना स्थान बना लोगे कि वहाँ से उठना ही नहीं चाहोगे। Clear ? आ रहा है समझ में?

प्रश्न : राम राम लिखित साधना कैसे मदद करती है?

राज दीदी ने कहा आपको कैसे करना है, वह आप सीख लोगे तो राम राम लिखित साधना से मदद कैसे होगी यह आपको समझ में आ जाएगा। संस्था की तरफ से राम राम बुक हमारे पास सेंटर पर उपलब्ध है। आपको आपके जीवन में जो चाहिए या आपको आपका स्वभाव परिवर्तित करना है या आपकी कोई wish है वो आपको बोलते जाना है। चाहे मन में बोलिए, चाहे ज़ोर से बोलिए। यह चीज मैंने उपलब्ध कर ली है या यह मैंने हासिल कर लिया है, नारायण आपका धन्यवाद है। मुंह से यह स्टेटमेंट बोलना है और राम राम लिखते जाना है। स्टेटमेंट आपको मुखसे बोलना है लेकिन लिखना राम-राम है। यह कैसे काम करता है वो देखिए - जो कुछ भी आपकी wish है वह आपके भाग्य में लिखी हुई नहीं है, but आपको वो चाहिए। तो जैसे-जैसे आप बोलते चले जाओगे और राम राम लिखते चले जाओगे। राम राम लिखने से जो आपके भाग्य में लिखा हुआ है वह rub होगा और आप आपके जीवन में जो पाना चाहते हैं वह आपके भाग्य में लिखता चला जाएगा। राम राम लिखने की बुक से आप सभी परिचित है, होना ही चाहिए आप NRSP हैं तो यह compulsory है। चाहे आप एक लाइन ही लिखो, चाहे एक बार ही राम लिखो २४ hours में, only one time पर आपको लिखना होगा। Only one time दिन भर में राम लिखा तो भी चलेगा। Is it clear ?

प्रश्नः- दीदी मेरा नाम श्रावनी जाधव है और मैं Masters Student हूँ, Bio Info Matrix Field में। मेरा सवाल यह है कि – काम या घर पर नकारात्मक माहौल से हम कैसे निपटें ? स्थिति को सुधारने के लिए हम क्या उपाय कर सकते हैं ?

दीदी :- घर में आपको नेगेटिविटी नज़र आती है और आप बाहर जहां भी जाते हैं वहां भी आपको नेगेटिविटी नज़र आती है। आपको घर में भी काला दिखाई देता है और बाहर भी काला दिखाई देता है तो ऐसे में आपको आपका चश्मा बदलना होगा। तो आपको पहले आत्म चिंतन करना है कि मेरे विचार, मेरा व्यवहार और मेरी वाणी कैसी है जिनकी वजह से मुझे घर और बाहर दोनों जगह पर ही नेगेटिविटी महसूस हो रही है। तो सबसे पहले आप अपने आप को संतुलित कर लेते हो, विशेष कर वाणी को। पूरा फोकस हमारा वाणी पर ही होना चाहिए। अपने दिमाग में thoughts चलते हैं, मुख से शब्द निकलते हैं और हमारा action body से होता है। बीच में वाणी है यह

सब को बैलेंस करता है, आपके thoughts और आपके actions को भी। आप किस तरह के शब्दों का इस्तेमाल कर रहे हैं उस पर फोकस कीजिए। आप तेज वाणी बोल रहे हैं, अशान्ती से भरे शब्द बोल रहे हैं। जैसे ही आप अपनी वाणी को संतुलित कर लोगे, positive words पर आ जाओगे, आपकी नेगिटिविटी Automatically कम हो जाएगी। First, you are responsible for that. Second, आपने उस पर काम किया, इसके बाद भी घर में नेगिटिविटी है और बाहर भी नेगेटिविटी है तो इसको दूर करने के लिए मैं क्या कर सकती हूँ? और ज्यों ही आप कदम आगे बढ़ाएंगे।

For Example: जैसे हम कहते हैं कि घर में सामान बहुत फैला हुआ है तो यदि आपने यह विचार करके सामान उठाना शुरू कर दिया कि atleast मैं मेरा तो सामान उठा के रख दूँ, तो बाकी लोग भी आपको देखकर धीरे-धीरे उनका सामान उठाना शुरू कर देंगे। शुरुआत आपसे होगी तो इस नेगेटिविटी को दूर करने के लिए मैं क्या contribute कर सकती हूँ? हमें अपने आप पर फोकस करना है और फिर उसे एक्शन में लाना है। आप पाएंगे कि धीरे-धीरे घर में और बाहर भी परिवर्तन होता चला जा रहा है। Clear?

प्रश्न :- शैलजा सरावगी । I am A Chartered Accountant and A Corporate Banker.

दीदी मेरा प्रश्न यह है कि हम ब्रह्म मुहूर्त की प्रार्थनाओं में रोज़ शामिल होते हैं, आपकी बताई हर साधना भी करते हैं, फिर भी हम कभी-कभी अपने विचार, वाणी, व्यवहार की साधना से चूक जाते हैं, और राम-राम की लिखित साधना हमें कैसे मदद करती है?

दीदी :- पहली बात तो हमें बहुत खुशी है कि इस young age में भी आप लोग ब्रह्म मुहूर्त की साधना attend करते हैं, I am very very happy. सुबह उठकर साढ़े चार बजे से ले कर सवा ५ बजे तक की साधना को attend करना ही बहुत बड़ा Achievement है।

सेकेंड, मुझे इस बात की खुशी है कि आप लोगों को इस बात का एहसास हुआ कि हमें अपने विचार, वाणी, व्यवहार पर काम करने की ज़रूरत है। यह इन प्रार्थनाओं का असर है, अन्यथा आपकी जो wish है, उसमें तो आप जो बोलते हैं कि मैं सही हूँ, वैसा ही लगता है आप लोगों को। जो भाषा आप बोलते हैं, जो actions करते हैं, everything is right. आपको यह एहसास होना कि हमको विचार, वाणी, व्यवहार पर काम करने की ज़रूरत है, यही मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। पहली उपलब्धि – आप लोग ब्रह्म मुहूर्त की साधना attend करते हैं। सेकंड – आपको एहसास है कि हमें इस पर काम करना है। हम ताली बजाते हैं, standing ovation देते हैं आपको कि आप इस बात को मान रहे हैं। थर्ड - जब आप ब्रह्म मुहूर्त की साधनाएं, प्राथनाएं attend करते हैं, आप लोगों का confession सुनते हैं, शुरू में बोलते वक्त वो क्या बोलते हैं कि हमसे यह गलतियां तब हुई थी जब हम आपके सत्संग से जुड़े नहीं थे। सत्संग से जुड़ने के बाद जब हमने सुना तब हमें यह एहसास हुआ कि वाकई हमने यह गलतियां की थी। उनसे वो गलतियां तब हुई थी, they have done that mistake जब वे सत्संग नहीं सुनते थे लेकिन आप लोग तो सत्संग में सुन चुके हैं कि किन – किन चीज़ों के क्या परिणाम होते हैं, क्या भुगतान करना

पड़ता है, result क्या आएगा, यह सब तो आप सुन ही चुके हैं। suppose फिर भी आप इन चीज़ों को फॉलो नहीं कर पाते हैं तो आपको एक काम करना है। एक blank नोटबुक लीजिए, दो पेज लेफ्ट राइट, ok? आपको लिखना है आपके विचार, व्यवहार, वाणी। यह वह सब चीज़ है जिन पर सुधार की ज़रूरत है पर आप नहीं कर रहे हैं। यदि ऐसा ही चलता रहा, मेरा व्यवहार ऐसा ही रहा, मेरी language ऐसी ही रही , मेरे actions ऐसे ही रहे तो after 5 years मैं भी confession के लिए hand raise करूंगी । क्या आपको उस category में बैठना है? जो राइट साइड का पेज है उस पर आपको लिखना है कि मैंने इन – इन स्वभाव और व्यवहार में changes लाए हैं। ५ साल बाद किस लिए मैं hand raise करके खड़ा रहूंगा? Jackpot वाले भी hand raise करते हैं, मालूम है क्या? कि हमने इतना काम किया और आज हमें इतनी उपलब्धियां हासिल हुई है। After 5 years आप किधर होंगे यह चॉइस आपकी है। कौनसी कैटेगरी में खड़ा होना है, कन्फेशन की या जैकपॉट की, यह आपका चुनाव है। उनको नहीं मालूम था तो उनसे गलतियां हो गई लेकिन आप लोगों को तो सब चीजें पहले से ही पता है।

राज दीदी ने आगे कहा कि अब इस पर काम कैसे करना है यह देखिए। अधिकतर ऐसा होता है कि हम बहुत जल्दी रिएक्ट कर देते हैं। विचार-This is silent, इधर क्या चलता है ये सामने वालों को नहीं मालूम पड़ता है but वाणी और एक्शन से सब पता चल जाता है। एक जगह शांति से बैठकर अगर आप काउंट करेंगे कि किन-किन चीजों पर मैं रिएक्ट कर देता हूं या रिएक्ट कर देती हूं और बाद में पछताता हूं या पछताती हूं, मुझे तो नहीं बोलना चाहिए था या ऐसा नहीं करना चाहिए था। वह दो, तीन, चार सिचुएशन ही होती है, बहुत ज्यादा लंबी चौड़ी लिस्ट नहीं निकलेगी। पिताजी ने ऐसा बोला और मैंने रिएक्ट कर दिया, मां ने ऐसा बोला और मैंने बोल दिया, भाई ने बोला, बहन ने बोला। यही जो फैमिली मेंबर्स है जिनके साथ आप रहते हो और जो आपके साथ रहते हैं, आउटसाइडर्स तो नहीं होते हैं, आपको बराबर अवेयरनेस होती है कि रिस्पांस ही देना है। सिर्फ घर में आपको चॉइस होती है। आप फैमिली मेंबर्स के सामने दो, तीन, चार सिचुएशंस पर रिएक्ट कर देते हैं और बाद में आपको feel भी होता है कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। आपको उसमें क्या करना है? आंखें बंद करके वह सिचुएशन देखनी है, विजुलाइज करना है क्योंकि बारंबार वही सिचुएशन आती है, बारंबार आप रिएक्ट करते हैं और बारंबार आपको feel होता है कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। आंखें बंद करके उस सिचुएशन को देखना है कि again मम्मी ने ऐसा बोला, again पापा ने ऐसा बोला और फिर मैंने ऐसा बोला उसकी जगह इस बार जब ऐसा होगा, वो बोलेंगे तो फिर मैं इस तरह रेस्पॉन्ड करुंगी या करूंगा, या फिर मेरा यह रेस्पॉन्स रहेगा। बारंबार आप अपने माइंड को मैसेज दो। मेरा यह रिस्पांस रहेगा, मेरा यह रिस्पांस रहेगा। नेक्स्ट टाइम जो सिचुएशन आएगी तब वे तो अपनी जगह बोलेंगे लेकिन आपका पहले जो no निकलता था, अब आपका yes निकलेगा और उसके बाद जो आपको अच्छा महसूस होगा क्योंकि रिएक्ट करके तो कभी अच्छा महसूस होने वाला ही नहीं है, फिर जाकर आप पांच बार सॉरी बोल लो, it doesn't matter , है ना। इसके बाद आपको जो बेनिफिट मिलेंगे और जो फायदा आपको होगा वह सिस्टम में आ जाएगा। क्योंकि हम मनुष्य हैं और हम लोगों का स्वभाव है, इंसानों का यह नेचर है कि जिन चीजों में हमें लाभ नज़र आता है, प्रॉफिट नज़र आता है, we catch that. एक पर एक free है तो ले लो उसको। इस इट क्लियर? एकदम अच्छे से ?

||नारायण नारायण||

युवा मंच

कुम्भ अर्थात् घड़ा!

हमारा शरीर भी एक घड़ा ही तो है। जब तक प्राण हैं संसार सागर में तैर रहा है। जैसे ही प्राण पखेरू इस घट को छोड़ उड़े, यह निर्जीव हो जाता है और इसकी तैरने की क्षमता भी जाती रहती है।

इसीलिए जब मृत्यु संस्कार करते हैं तब जल से भरा घड़ा फोड़ने का रिवाज है। यह एक प्रतिकात्मक संस्कार है।

प्राण रूपी जल पुनः ब्रह्मांड में विलीन हो जाता है ।

अब आते हैं आज कल चल रहे महाकुंभ में जो उत्तर प्रदेश के पावन नगर प्रयागराज में चल रहा है।

यह पर्व बारह वर्ष में एक बार आता है। मकर संक्रांति के पावन अवसर पर आने वाला यह पर्व आदिकाल से हमारी संस्कृति का हिस्सा है।

यह हर १२ साल में चार स्थानों हरिद्वार, प्रयागराज (इलाहाबाद), उज्जैन और नासिक में आयोजित होता है। कुंभ मेला इसलिए लगाया जाता है क्योंकि यह पौराणिक अमृत कलश की कथा, खगोलीय घटनाओं और कई अन्य धार्मिक मान्यताओं से जुड़ा है।

कुंभ मेले का उद्देश्य श्रद्धालुओं को आत्म शुद्धि का अवसर प्रदान करना है। मान्यता है कि कुंभ मेला के दौरान इन स्थानों पर स्नान करने से सभी पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। कुंभ मेले में गंगा, यमुना, और अदृश्य सरस्वती के संगम में स्नान करने से पापों का नाश और आत्मा की शुद्धि होती है। यह मेला साधु-संतों, गुरुओं और श्रद्धालुओं के मिलन का केंद्र है, जहां ज्ञान, भक्ति और सेवा का आदान-प्रदान होता है।

कुंभ मेला अपने आप में दुनिया का सबसे बड़ा मेला है । पूरा विश्व इस बात पर अचंभित है कि कैसे इतना बड़ा आयोजन संभव है जहां रहने, खाने पीने, रहने की सभी व्यवस्था बिना किसी अनुमान के हो जाती हैं।

इस उत्सव का धार्मिक महत्व तो है ही पर साथ में ज्ञानी जनों के आने से ज्ञानवर्धन के अवसर मिलते हैं, विभिन्न प्रदेशों की वेश भूषा व परंपराओं से परिचय होता है और साथ ही होता है संपूर्ण भारत का एकीकरण ।

बच्चों की फुलवारी

टीम सतयुग ने तय किया कि इस बार हम कुंभ मेले के बारे में बतायेंगे जो इस समय भारत में चलन में है। सोशल मीडिया, डिजिटल मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और प्रिंट मीडिया में प्रयागराज में चल रहे कुंभ मेले के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है।

कुंभ मेला क्या है?

कुंभ मेला भारत में एक बहुत ही खास त्योहार है, जहाँ लाखों लोग पवित्र स्नान करने और प्रार्थना करने के लिए एक साथ आते हैं।

इसे कुंभ क्यों कहा जाता है?

संस्कृत में 'कुंभ' का अर्थ है 'घड़ा'। किंवदंती के अनुसार, देवताओं और राक्षसों के बीच अमृत के एक जादुई घड़े के लिए लड़ाई हुई, जो अनंत जीवन देता था।

कुंभ को राक्षसों से बचाने के लिए, भगवान विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण करके घड़े को जब्त कर लिया और भाग गए। उनकी यात्रा के दौरान, अमृत की कुछ बूँदें चार स्थानों पर गिरीं: प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक, जो कुंभ मेले के लिए पवित्र स्थल बन गए। ये चार स्थल पवित्र हो गए, और बारी-बारी से कुंभ मेले की मेजबानी की। कुंभ मेला सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति की खगोलीय स्थिति के आधार पर १२ साल के चक्र का पालन करता है। महाकुंभ हर १४४ साल में पड़ता है और यह केवल प्रयागराज में पड़ता है।

कुंभ मेले में क्या होता है?

१. पवित्र स्नान: लोग पवित्र नदियों में डुबकी लगाते हैं, यह मानते हुए कि इससे उनके पाप धुल जाएंगे और सौभाग्य आएगा।

२. प्रार्थना और पूजा: भक्त देवी-देवताओं के सम्मान में प्रार्थना करते हैं, गाते हैं और अनुष्ठान करते हैं।

३. जुलूस और परेड : रंग-बिरंगे जुलूस और परेड होते हैं, जिसमें विस्तृत वेशभूषा, संगीत और नृत्य शामिल होते हैं।

४. भोजन और मौज-मस्ती: सभी के आनंद के लिए स्वादिष्ट भोजन, खेल और गतिविधियाँ उपलब्ध हैं।

कुंभ मेला क्यों महत्वपूर्ण है?

१. आध्यात्मिक महत्व : कुंभ मेला आध्यात्मिक विकास, आत्म-चिंतन और ईश्वर से जुड़ने का समय है। नागा साधु, सिद्धियाँ मोक्ष की तलाश में कुंभ में आते हैं।

२. सांस्कृतिक विरासत: यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं का उत्सव है।

३. सामुदायिक बंधन: सभी क्षेत्रों के लोग एक साथ आते हैं, एकता, प्रेम और सद्भाव को बढ़ावा देते हैं।

४. महाकुंभ दुनिया का सबसे बड़ा मानव समागम है !

५. कुंभ हर १२ साल में होता है, और हर बार, यह एक अलग स्थान पर आयोजित किया जाता है। अर्ध कुंभ हर ६ महीने में और महाकुंभ १४४ साल में होता है।

६. यह त्यौहार इतना बड़ा है कि इसे अंतरिक्ष से भी देखा जा सकता है !

विभिन्न आध्यात्मिक संगठनों के सभी धार्मिक प्रमुखों के पास अपने अखाड़े या टेंट हैं, जो कुंभ स्नान के लिए आने वाले अपने भक्तों का सत्कार करते हैं।

कुंभ क्यों महत्वपूर्ण है?

जैसा कि सद्गुरु ने खूबसूरती से समझाया है:-

जब हम तनाव में होते हैं या थकावट भरे दिन के बाद, स्नान हमें तरोताजा कर देता है। यही पानी की शक्ति है। इसी तरह कुंभ आत्मा को शुद्ध करने में मदद करता है।

जैसा कि सथुरु कहते हैं, हम सभी को एक बार कुंभ अवश्य जाना चाहिए क्योंकि यह जीवन में एक बार आने वाला अनुभव है तथा जादुई अनुभूति प्रदान करता है।

दीदी के छाँव तले

सतयुग के इस स्तंभ में हम ऐसे कन्फेशन प्रस्तुत करते हैं जो लोगों ने ऑन लाइन भवन में किए । स्वयं को सुधारा और सप्त सितारा जीवन के हकदार बने: - कुछ ऐसे ही कन्फ़ेशन और कमिटमेंट

अन्न का अपमान किया

पहले मैं भोजन बहुत झूठा छोड़ती थी । आपसे जुड़ने से पहले मुझे अन्न की कदर नहीं थी। खाना बच जाता था, ज़्यादा बना लेती थी, फिर नारायण नारायण करना पड़ता था, ज़रूरत से ज़्यादा खा लेती थी । परिणाम- अस्वस्थ हूँ। कृपया क्षमा करें।

घर से निकाल दिया

मैंने और मेरी मम्मी ने घर में किसी को बिना बताये ही मार्किट से पैसा ब्याज पर उठा लिया था और हम उसको चुका भी नहीं पा रहे हैं, जिसके चलते गुस्से में आ कर पापा ने हमें घर से बहार निकाल दिया है। हम झूठ बोलने के लिए नारायण भवन में क्षमा मांगते हैं।

जैसा किया वैसा प्रकृति ने लौटाया

मेरी बहन हार्ट की बीमारी से ग्रसित है और पूरी तरह से बेड पर आ गयी है। नारायण सतसंग से जुड़ कर उसको अपनी भूल का एहसास हो रहा है। कई वर्षो पहले जब वो किराये के मकान में रहती थी तब मकान मालकिन, जो कि पहले तो स्वस्थ थीं परन्तु फिर वो किसी बीमारी की शिकार हो गयीं थीं। मेरी बहन पहले जब वो चलतीं फिरतीं थीं तब उनके बुलाने पर जा कर बात कर लेती थी परन्तु जब मकान मालकिन बिस्तर पे आईं, तब मेरी बहन बहुत खीज जाती थी और उनके पास जा कर नहीं बैठती थी, वे आवाज़ लगाती रह जाती थीं । अब परिणाम यह है कि मेरी बहन भी पूरी तरह से बेड पर है और घर का कोई भी सदस्य उनके पास आकर नहीं बैठता है वो पुकारती ही रह जाती हैं। वो अपने इस कर्म के लिए क्षमा मांगती हैं।

कर्मों का फल

मेरे पति मुझे बहुत अपशब्द बोलते थे, तो मैं गुस्से में अपनी सास के साथ बहुत बदतमीज़ी करती थी, उनका गला भी पकड़ा। सासु माँ तो नारायण धाम चले गए हैं। परिणाम- मुझे बी पी, डायबिटीज, थाइरोइड सभी बीमारियां हैं, चारों दिशाओं से समृद्धि रुकी हुई है। नारायण भवन में नाक रगड़ कर माफ़ी मांगती हूँ।

बनवारी लाल जी तपड़िया को जन्मदिवस (२९ जनवरी) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि से भरा नारायण आशीर्वाद ।

ईमानदारी

मैंने पोर्टर से कुछ सामान भिजवाया था, तब उसको बढ़ा के कुछ अमाउंट दिया था, जैसा आप कहते हैं। थोड़े दिनों बाद फिर से उन्ही से कुछ सामान भिजवाया। मैंने अपने स्टाफ को कहा था उनको पेमेंट करने को, गलती से दो बार पेमेंट हो गया। मैंने उनको फ़ोन किया तो उन्होंने ईमानदारी से एक्स्ट्रा अमाउंट वापस लौटा दिया।

सास- ससुर की प्रॉपर्टी की चर्चा की

हमारे बड़े भैया भाभी ने जो सास - ससुर जी की करोड़ों की प्रॉपर्टी थी वह अपने पास रख ली थी, हम बाहर रहते थे तो पेपर वर्क में सहूलियत हो इसलिए हमने अपनी पावर ऑफ़ अटॉर्नी उनके नाम कर दी थी। हमने उनसे झगड़ा तो नहीं किया परन्तु इस बात की बहुत बढ़ चढ़ कर चर्चा की । इसका परिणाम यह है कि हमारा काम जो बहुत अच्छा चलता था, अब पति ने बताया कि हमारे ऊपर २६ करोड़ रूपए का लोन चढ़ गया है। मुझे चर्चा करने के लिए नारायण भवन में क्षमा दिलवाएं दीदी।

दीदी के दिखाए रस्ते पर चले, प्रॉपर्टी का लालच छोड़ा

मेरे पापा मम्मी करोड़ों की प्रॉपर्टी छोड़ कर गए, उसके लिए मेरे भाई बहन आपस में नारायण नारायण कर रहे हैं । आपसे काउन्सलिंग के दौरान आपने मुझे कहा कि लड़ झगड़ कर कुछ नहीं लेना है। मैंने अपने भाई बहन से कह दिया है कि मुझे आपकी इस नारायण सिचुएशन में नहीं पड़ना है। तब से मेरे मन में बहुत शान्ति है, पवित्र विचार आते हैं और पति के व्यापार में चार गुना वृद्धि हुई है, वो भी लव, रेस्पेक्ट, फेथ, केयर भरे माहौल में। आपकी गाइडेंस के लिए कोटि कोटि धन्यवाद।

प्रेरणादायक वृत्तांत

कुंभ की पहली कथा

दुनिया के लिए कुंभ मेला किसी वरदान से कम नहीं है लेकिन कुंभ की उत्पत्ति की कथा में एक ऋषि का श्राप भी है और वह हैं महर्षि दुर्वासा। कथा के अनुसार, महर्षि दुर्वासा ने एक दिव्य माला देवराज इंद्र को दी थी। देवताओं का राज होने की वजह से घमंड में चूर इंद्र ने उस माला को अपने ऐरावत हाथी के मस्तक पर रख दिया था । ऐरावत के मस्तक से माला गिर गई और उसने अपने पैरों से माला को रौंद डाला । महर्षि दुर्वासा ने इसे अपना अपमान समझा और क्रोध में आकर इंद्र को श्राप दे दिया। इससे सारे संसार में हाहाकार मच गया। भगवान विष्णु की कृपा से सागर मंथन का आयोजन किया गया, जिसमें से माता लक्ष्मी और अमृत निकला । देव-दानव के विवाद में अमृत की कुछ बूंदे धरती पर गिरीं, जिसकी वजह से कुंभ मेला लगने की परंपरा शुरू हुई। कुंभ मेले के पीछे महर्षि दुर्वासा का श्राप भी एक निर्णायक घटना थी।

कुंभ की दूसरी कथा

प्रजापति दक्ष की दो पुत्रियों कद्रू और विनता की शादी कश्यप ऋषि से ब्याही गई थीं। एक बार दोनों में विवाद हो गया कि सूर्य के अश्व काले हैं या सफेद। दोनों में शर्त लगी कि जिसकी बात झूठी निकलेगी, वही दासी बन जाएगी। यह तय किया गया कि दोनों बहनें अगले दिन यह पता करने जाएंगी। कद्रू ने अपने पुत्रों को आदेश दिया कि वे जाकर अश्व की पूंछ पर लिपट जाएं, जिससे उसकी पूंछ काली लगे। दोनों बहनें फिर साथ गईं और अश्व को देखकर विनता हार गईं और शर्त के अनुसार उसे दासी बनना पड़ा। उसके कुछ दिन बाद विनता के पुत्र गरुड़ का जन्म हुआ। विनता के साथ-साथ गरुड़ को भी पुत्र सर्पों की भी सेवा करनी पड़ती थी। जब गरुड़ ने अपनी और अपनी मां की इस दासता से मुक्ति के लिए पूछा तो सर्पों ने कहा कि वह नागलोक से अमृत कुंभ ला देगा तो इससे दासता मुक्त हो जाएगी। गरुड़ नागलोक के लिए निकल पड़े तो वासुकि ने इंद्र को सूचना दे दी। इंद्र ने गरुड़ पर चार बार आक्रमण किया और चारों प्रसिद्ध स्थानों पर कुंभ का अमृत छलका, जिससे कुंभ पर्व की शुरुआत हुई।

कुंभ की तीसरी कथा

सागर मंथन की । सागर मंथन देवताओं और असुरों के बीच किया गया पहला काम था। समुद्र मंथन से १४ चीजों की प्राप्ति हुई थी, जिसको देवताओं और असुरों के बीच बांट लिया गया था। लेकिन अंत में निकले अमृत को लेकर दोनों के बीच संघर्ष शुरू हो गया। जिसकी वजह से अमृत की कुछ बूदें पृथ्वी पर गिर गईं। जहां-जहां अमृत छलका वहां-वहां कुंभ मेले का आयोजन शुरू हो गया।

गंगा में धोया पाप कहाँ जाता है ?

एक बार एक ऋषि ने सोचा कि लोग गंगा में पाप धोने जाते है, तो इसका मतलब हुआ कि सारे पाप गंगा में समा गए और गंगा भी पापी हो गयी !

अब यह जानने के लिए तपस्या की, कि पाप कहाँ जाता है ?

तपस्या करने के फलस्वरूप देवता प्रकट हुए, ऋषि ने पूछा कि भगवन जो पाप गंगा में धोया जाता है वह पाप कहाँ जाता है ?

भगवन ने कहा कि चलो गंगा से ही पूछते है, वे दोनों के गंगा के पास गए और कहा कि 'हे गंगे ! जो लोग तुम्हारे

यहाँ पाप धोते हैं तो इसका मतलब आप भी पापी हुई।'

गंगा ने कहा 'मैं क्यों पापी हुई, मैं तो सारे पापों को ले जाकर समुद्र को अर्पित कर देती हूँ।'

अब वे लोग समुद्र के पास गए, 'हे सागर ! गंगा जो पाप आपको अर्पित कर देती है तो इसका मतलब आप भी पापी हुए !'

समुद्र ने कहा 'मैं क्यों पापी हुआ, मैं तो सारे पापों को लेकर भाप बना कर बादल बना देता हूँ !'

अब वे लोग बादल के पास गए और कहा 'हे बादलों ! समुद्र जो पापों को भाप बनाकर बादल बना देते हैं, तो इसका मतलब आप भी पापी हुए।

बादलों ने कहा 'मैं क्यों पापी हुआ, मैं तो सारे पापों को वापस पानी बरसा कर धरती पर भेज देता हूँ, जिससे अन्न उपजता है, जिसको मानव खाता है, उस अन्न में जो अन्न जिस मानसिक स्थिति से उगाया जाता है और जिस वृत्ति से प्राप्त किया जाता है, जिस मानसिक अवस्था में खाया जाता है, उसी अनुसार मानव की मानसिकता बनती है!'

अन्न को जिस वृत्ति (कमाई) से प्राप्त किया जाता है और जिस मानसिक अवस्था में खाया जाता है, वैसे ही विचार मानव के बन जाते हैं ! इसीलिये सदैव भोजन सिमरन और शांत अवस्था में करना चाहिए और कम से कम अन्न जिस धन से खरीदा जाए वह धन ईमानदारी एवं श्रम का होना चाहिए !

जैसे- भीष्म पितामह शरशय्या पर पड़े प्राण त्यागने के लिए शुक्लपक्ष के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे, भगवान श्रीकृष्ण के आदेश पर युधिष्ठिर उनसे प्रतिदिन नीति ज्ञान लेते थे। द्रौपदी कभी नहीं जाती थीं। इससे भीष्म के मन में पीड़ा थी। श्रीकृष्ण ने भांप लिया था। उन्होंने युधिष्ठिर से कहा- अंतकाल की प्रतीक्षा में साधनारत पूर्वज से सपरिवार मिलना चाहिए, परिवार पत्नी के बिना पूर्ण नहीं है।

इशारा समझकर युधिष्ठिर जिद करके द्रौपदी को भी साथ ले गए। पितामह उन्हें नीति ज्ञान देने लगे। द्रौपदी कुंठित होकर चुपचाप सुन रही थी, अचानक द्रोपदी को हंसी आ गई।

भीष्म ने कहा- पुत्री तुम्हारे हंसने का कारण मैं जानता हूं। द्रोपदी सकुचाई तो भीष्म ने कहा- पुत्री तुम अपने मन की दुविधा पूछ ही लो, मुझे शांति मिलेगी।

द्रोपदी ने कहा- स्वयं भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि भीष्म के समान नीति का ज्ञाता दूसरा कोई नहीं किंतु आपका ज्ञान कहां लुप्त हो गया था जब पुत्रवधू आपके सामने निवस्त्र की जा रही थी?

भीष्म ने कहा- इसी प्रश्न की प्रतीक्षा थी। जैसा अन्न वैसा मन। मैं दुर्योधन जैसे अधर्मी का अन्न खा रहा था। उस अन्न ने मेरी बुद्धि जड़ कर दी थी। सही निर्णय लेने की क्षमता खत्म हो गई थी। अन्न ही रक्त का कारक है। अर्जुन के बाणों ने मेरे शरीर से वह रक्त धीरे-धीरे करके निकाल दिया है। अब इस शरीर में सिर्फ गंगापुत्र भीष्म शेष है। सिर्फ माता का अंश है जो सबको निर्मल करती हैं इसलिए मैं नीति की बातें कर पा रहा हूं।

भीष्म की बात को अटल सत्य समझिए। दुराचार से या किसी को सताकर कमाए गए धन से यदि आप परिवार का पालन करते हैं तो वह परिवार की बुद्धि भ्रष्ट करता है। उससे जो सुख है वह क्षणिक है किंतु लंबे समय में वह दुःख का कारण बनता है। यदि आपके सामने गलत तरीके से पैसा कमाकर भी कोई फल-फूल रहा है तो यह समझिए कि वे उसके पूर्वजन्म के संचित पुण्य हैं जिसे वह निगल रहा है। जैसे ही वे पुण्य कर्म समाप्त होंगे, उसके दुर्दिन आरंभ होंगे।

॥ 卐 ॥

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyo,

॥ Narayan Narayand ॥

Hearty wishes for the Kumbh festival going on in Prayagraj Allahabad.

Kumbh Mela is an integral part of our culture. Why is Kumbh Mela celebrated? What are its benefits? Since when is it celebrated? You will read its detailed information in the following pages of Satyug. **Kumbh is not just a religious fair but an important journey for self-purification, spiritual progress and attainment of salvation**. This is an opportunity when a human being, seeking detachment from the attachments of worldly life, can move forward on the path of self-realization and attainment of God.

When we take mental Kumbh bath in Brahma Muhurta, a large number of satsangis virtually get together and generate vibrations of collective bath. So much power and energy is generated in these rays that it gives the benefit of collective Kumbh bath.

The beginning of Kumbh Mela is connected to the Kumbh that emerged from the churning of the ocean. If we think about this historical story, we will find that this story teaches us that if you are surrounded by adverse circumstances, then churn your brain in the form of a Kumbh. When we churn and remain silent, first of all negative thoughts go away and then gradually positive thoughts start appearing. Similarly, many difficulties come in the beginning of any work. While working, like the gems that come out of the churning of the ocean, many stages come, sometimes failure, sometimes success. But if we keep trying continuously, then in the end we reach Amrit i.e. our goal from the Kumbh of the mind and the feeling of achieving the goal is no less than the feeling of bathing in Kumbh.

We have to learn this from the great Kumbh festival that in adverse circumstances, churn the Kumbh of the mind so that negativity goes away and you are filled with positivity.

All good,

R. Modi

CO-EDITOR
Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM
Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office
Narayan Bhawan
Topiwala Compound, station road,
Goregaon (West), Mumbai.

Editorial Office
Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

AHMEDABAD	JAIWINI SHAH	9712945552
AKOLA	SHOBHA AGRAWAL	9423102461
AKOLA	RIYA AGARWAL	9075322783
AMRAVATI	TARULATA AGRAWAL	9422855590
AURANGABAD	MADHURI DHANUKA	7040666999
BANGALORE	KANISHKA PODDAR	7045724921
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9341402211
BASTI	POONAM GADIA	9839582411
BIHAR	POONAM DUDHANI	9431160611
BHILWADA	REKHA CHOUDHARY	8947036241
BHOPAL	RENU GATTANI	9826377979
CHENNAI	NIRMALA CHOUDHARY	9380111170
DELHI (NOIDA)	TARUN CHANDAK	9560338327
DELHI(NOIDA)	MEGHA GUPTA	9968696600
DELHI (W)	RENU VIJ	9899277422
DHULIA	RENU BHATWAL	878571680
GONDIYA	POOJA AGRAWAL	9326811588
GAUHATI	SARLA LAHOTI	9435042637
HYDERABAD	SNEHALATA KEDIA	9247819681
INDORE	DHANSHREE SHIRALKAR	9324799502
JALANA	RAJNI AGRAWAL	8888882666
JALGAON	KALA AGARWAL	9325038277
JAIPUR	PREETI SHARMA	9461046537
JAIPUR	SUNITA SHARMA	8949357310
JHUNJHNU	PUSHPA DEVI TIBEREWAL	9694966254
ICHAKARANJI	JAY PRAKASH GOENKA	9422043578
KOLHAPUR	RADHIKA KUMTHEKAR	9518980632
KOLKATTA	SWETA KEDIA	9831543533
KANPUR	NEELAM AGARWAL	9956359597
LATUR	JYOTI BHUTADA	9657656991
MALEGAON	REKHA GARODIA	9595659042
MALEGAON	AARTI CHOUDHARY	9673519641
MORBI	KALPANA CHOUARDIA	8469927279
NAGPUR	SUDHA AGRAWAL	9373101818
NANDED	CHANDA KABRA	9422415436
NAWALGARH	MAMTA SINGRODIA	9460844144
NASIK	SUNITA AGARWAL	9892344435
PUNE	ABHA CHOUDHARY	9373161261
PATNA	ARBIND KUMAR	9422126725
PURULIYA	MRIDU RATHI	9434012619
PARATWADA	RAKHI MANISH AGRAWAL	9763263911
RAIPUR	ADITI AGRAWAL	7898588999
RANCHI	ANAND CHOUDHARY	9431115477
SURAT	RANJANA AGARWAL	9328199171
Sangli	Hema Mantri	9403571677
SIKAR (RAJASTHAN)	SUSHMA AGARWAL	9320066700
SHRI GANGANAGAR	MADHU TRIVEDI	9468881560
SATARA	NEELAM KDAM	9923557133
SHOLAPUR	SUVARNA BALDEVA	9561414443
SILIGURI	AKANKSHA MUNDHRA	9564025556
TATA NAGAR	UMA ARAWAL	9642556770
ROURKELA	UMA ARAWAL	9776890000
UDAIPUR	GUNWATI GOYAL	9223563020
HUBLI	PALLAVI MALANI	9901382572
VARANASI	ANITA BHALOTIA	9918388543
VIJAYWADA	KIRAN JHAWAR	9703933740
VARDHA	RUPA SINGHANIA	9833538222
VISHAKAPATTNAM	MANJU GUPTA	9848936660

INTERNATIONAL CENTRE NAME AND NUMBER

AUSTRALIA	RANJANA MODI	61470045681
DUBAI	VIMLA PODDAR	+971528371106
KATHMANDU	RICHA KEDIA	+977985-1132261
SINGAPORE	POOJA GUPTA	+6591454445
SHRJAH-UAE	SHILPA MANJARE	+971501752655
BANGKOK	GAYATRI AGARWAL	+66952479920
VIRATNAGAR	MANJU AGARWAL	+977980-2792005
VIRATNAGAR	VANDANA GOYAL	+977984-2377821

Editorial

Dear Readers,

ll Narayan Narayan ll

For the last 15 days, everyone is going to Allahabad for Kumbh bath. Kumbh takes place every 12 years but we have never heard so much discussion about it as much as this year's Kumbh is being discussed. To satisfy this curiosity, Team Satyug thought that this time the issue of Satyug should be based on Kumbh and the team got busy in this effort and now this issue is reaching you all with detailed information about Kumbh.

All of you will take advantage of Kumbh bath with all these best wishes -

Yours own,
Sandhya Gupta

To get
important message and information from NRSP Please Register yourself on 08369501979
Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net

narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

Call of Satyug

The word "Kumbh" means "pot" or "urn" in Sanskrit, which is a symbol of life, knowledge, prosperity, spirituality and immortality. This word holds a special place in astrology, religion, Vastu Shastra, mythology and Indian traditions. Kumbh means pot. Kumbh is not just a simple word, but a deep symbol of Indian culture, religion, history and spirituality. It is a symbol of knowledge, energy, nectar, and religion.

Actually, Kumbh Mela started with a mythological story. According to the mythological story, once the ocean churning took place between the gods and demons. It happened that Rishi Durvasa had cursed the gods, due to which they became weak. The demons took advantage of this and defeated the gods. After which all the gods went to Lord Vishnu to ask for help. Lord Vishnu said that to get Amrit, the ocean will have to be churned. Amrit, that is an immortal drink, by drinking which the gods will become powerful again. Now the gods persuaded the demons that let's churn the ocean together. The demons also agreed in greed for Amrit.

When the ocean was churned, many things came out – like Kamdhenu cow, poison and finally the pot of nectar. As soon as the pot of nectar came out, both demons and Gods started fighting to get it. Meanwhile, Lord Indra's son Jayant picked up the pot of nectar and ran away from there. The demons chased Jayant. During this, the fight between gods and demons continued for 12 days. Jayant kept running with the pot of nectar and during this time some drops of nectar fell on four places of the earth,

1. Ganga in Haridwar: - Ganga river descends into the plains from Haridwar itself. It is believed that the Ganga river here is like nectar.

2. Prayagraj (Allahabad) - Triveni at Prayag at the confluence of Ganga, Yamuna and Saraswati. Here the confluence of Ganga, Yamuna and Saraswati is considered, hence the water here is like Maha Amrit.

3. Shipra in Ujjain: Here the Shipra river flows towards the north. Just like the Ganga flows towards the north in Banaras.

4. Godavari in Nasik: Here the Godavari, known as the Ganga of the south, meets Aruna and Varuna.

Therefore these places are considered holy and Kumbh Mela is organized here. According to legend, it took Brihaspati 12 days to steal the Kalash from Jayant and save it from the demons. One day of the gods is equal to one year of humans, hence

Maha Kumbh is celebrated once in 12 years.

Types of Kumbh Melas

There are 12 Kumbh, out of which 4 Kumbh are organized on earth and 8 Kumbh are organized in Devlok. Earlier, the Purna Maha Kumbh was organized in the year 2013.

Purna Kumbh Mela Purna Kumbh Mela is organized in 12 years and this fair is held in 4 places of India, Prayagraj, Haridwar, Nashik and Ujjain. All the four Kumbh Melas are organized at an interval of every 12 years. When there are 12 Purna Kumbh, it is called Maha Kumbh. That is why the Kumbh Mela being held in Prayagraj this time has been named Maha Kumbh. It is clear from this that any person can get the virtue of bathing in Maha Kumbh only once in his life.

This year Purna Kumbh has been organized in Prayagraj Allahabad after 144 years.

Ardh Kumbh Mela

Ardh Kumbh Mela means half Kumbh Mela. This fair is held every 6 years in two places Prayagraj and Haridwar.

Kumbh Mela

Kumbh Mela is organized every third year at four different places.

Magh Kumbh Mela

Every year in the month of Magh, Magh Kumbh Mela is organized in Prayagraj.

Simhastha Kumbh

Simhastha Kumbh is related to Leo sign. Simhastha Kumbh is organized in Ujjain when Jupiter is in Leo sign and Sun is in Aries sign.

How is the place selected for Kumbh Mela? The position of planets plays an important role in deciding the place of Kumbh Mela. According to astrological calculations, when Jupiter enters Aries or Leo and the position of Sun and Moon forms a special Yoga, then Kumbh Mela is organized. It is believed that this position of planets comes on 12th. Therefore Kumbh Mela is organized in 12 years.

When Jupiter enters **Aquarius and Sun and Moon** enter Aries and Sagittarius respectively, then Kumbh is organized in Haridwar. When **Jupiter enters Leo zodiac and Sun and Moon enter Cancer zodiac**, then Kumbh is organized in **Nasik** and **Trambakeshwar.**

When **Jupiter is in Taurus zodiac and Sun and Moon are in Capricorn zodiac**, then Kumbh is organized in **Prayagraj.**

When **Sun is in Leo zodiac and Jupiter is also in Leo zodiac**, then Kumbh Mela is held in **Ujjain.**

Prayagraj: Sangam city i.e. Prayagraj district of Uttar Pradesh, where this time Maha Kumbh 2025 is organized from January 13 and will continue till February 26. It is estimated that 40 to 45 crore devotees from India and abroad will come.

The spiritual significance of Kumbh is very deep and wide. It is not only a major religious festival of Hinduism, but is also considered an important means of self-purification, spiritual awakening and attainment of salvation.

Key aspects of the spiritual significance of Kumbh:

Bathing in holy rivers like Ganga, Yamuna, Saraswati, Kshipra and Godavari in Kumbh is considered extremely virtuous. This bath is considered to be a means of liberation from sins and self-purification. Kumbh Mela is an occasion when innumerable saints, mahatmas, yogis and devotees gather. During this time, spiritual energy is accumulated through Satsang, meditation, chanting and yagna, which speeds up the process of self-awakening.

During Kumbh, many sanyasis, saints, mahants of akharas and scholars from all over the country gather. Their discourses and guidance provide spiritual knowledge, which gives direction to religion and truth in life. Yoga and meditation camps are organized in the Kumbh Mela, which pave the way for self-introspection, mental peace and spiritual progress.

The traditional concept of Kumbh has been important from a religious, astrological and spiritual point of view. But in modern times, the form and concept of Kumbh has changed. Now it is not limited to just a religious event or astrological concept, but it is also seen from a social, cultural, spiritual and tourism point of view. Today Kumbh has become a symbol of spirituality, cultural renaissance, scientific consciousness, and global cooperation.

The changing nature of Kumbh in the modern era

(a) Kumbh is no longer just a religious event

Earlier, Kumbh Mela was mainly for Hindu saints, pilgrims, and devotees. Now

Kumbh also includes yoga, meditation, spiritual discussions, cultural festivals, and scientific seminars.

b) It has become the world's largest spiritual and cultural conference. Kumbh has now become a global platform to present Indian culture and heritage globally. Spiritual gurus, scholars, yogacharyas, and researchers from different countries participate in it. Art, music, dance, and folk traditions are promoted.

© In the modern Kumbh, special attention is given to Ganga cleaning campaign, organic farming, tree plantation, and water conservation. Government and social organizations are working together to reduce the use of plastic and save the environment.

(d) Now technologies like drones, artificial intelligence (AI), and digital mapping are used in the Kumbh Mela. Mobile apps, virtual guides, and live streaming facilities are provided for pilgrims.

NRSP and Kumbh

NRSP gives a very simple and easy analysis of Kumbh. Kumbh means pot, when you have to take something out of the pot, you have to put your hand in it. NRSP believes that whenever you enter this ocean of life with the pot of mind, sometimes the circumstances will be favourable and sometimes unfavourable. Whenever you go through unfavourablecircumstances, meditate on the thoughts within this pot of mind, take a dip in positivity and adopt a pure form. Help others, make good use of speech, speak softly and sweetly and be in the spirit of giving every moment and take the benefit of Kumbh bath while sitting at home.

Kumbh has now become a confluence of tradition and modernity, which gives the message of peace, knowledge and spirituality to the world. "Kumbh Mela is an example of India's unity in diversity, where people of different sects, traditions and faiths come together. It gives the message of religious tolerance and harmony in society. Kumbh is held during a special astronomical coincidence, when the position of the planets is considered extremely favourable for spiritual practice. It is believed that the effect of religious activities performed at this time increases manifold. Kumbh is not just a religious fair, but an important journey of self-purification, spiritual advancement and attainment of salvation. This is an occasion where a person can move forward on the path of self-realization and attainment of God by detaching himself from his worldly life for some time.

॥ 卐 ॥

Wisdom Box (Glimpses of Satsang)

In this column of Wisdom Box, we have brought to you answers to the questions asked by Radiant Stars to Raj Didi under the Meet and Greet program organized by our Radiant Stars.

Question: - My name is Maharshi Dave, I am an actor. Didi, sometimes I have to listen to my friends. They use many wrong and negative words but I cannot say anything to them because some of them do not understand, so what should be my action towards them be ?

Didi:-We are NRSP and we know the importance of words and action that "Whatever we give we receive." We have come to know about the power of words very well, that we should not utter wrong words even in jest. Raj Didi questioned the Radiant stars about their experience of using negative words despite knowing the impact of negative words and what consequences they had to face. Raj Didi further added that we have understood NRSP very well but those who are not associated with NRSP, they speak the same words, do the same actions and when we try to explain, they react in jest. What should we do in such a situation? First of all we should remain calm, we should pray for them silently, we should not comment, we should not discuss. He does not understand this, he speaks this, he does that, we do not know what will be the result of this, you should not think about all this. Just say in your mind that Narayan give him wisdom, he should speak good, he should do good.Continuously, give blessings to him, prayers should be done for him. Is it clear...?? We should not go out and discuss anywhere. You have a friend, suppose he is also an NRSP, you are also an NRSP and the third person who is your friend is not an NRSP, and he uses such words but both of you should not discuss about that. If someone starts the discussion, you should immediately say let's pray for him so that he also becomes an NRSP and joins us. This is the answer to your question.

Q- Narayan Narayan Didi, my name is Varun Agarwal. I am a Law Final Year Student.

Question: If it is written in your birth chart(horoscope) that you are going to get a partner with Narayan Narayan nature or a Narayan Narayan incident is going to happen with you, can we change that too ?

Didi:- (Smiling) What kind of questions do you people ask. You have your birth chart (horoscope), it is written in it that how your partner will be. We will give the example, you people will give the answers. Suppose a student has got 50% marks in the half yearly exam. That child is amidst usand we talk about the fact that he got only 50%. He has 6 months in his hand, if that student worked hard in those 6 months, will the marks increase or not? Can the child get 98, 99 or 100% or not? Someone from the audience replied " yes Didi, the marks will increase and that child can get more marks."

It is written in your birth chart that you will get such a life partner. The hard work you did during the half yearly exam is based on that and it is like what is written in your Janam Kundli, if you work hard in future, do Jaap, do good deeds in future then there is every possibility of it changing. What is written in your Janam Kundli is based on your past deeds. If you want something good and best then you will have to do good deeds in future. Is it clear?

Look, it has indicated to you that there is a possibility of you getting such a partner. Your Janam Kundli does not say that you will get just like that. It is good that it has already indicated to us, we have to do good deeds. We have to improve our thoughts, behaviour and speech. Simultaneously, as soon as you change yourself, improve yourself, then automatically there will be improvement in your Janam Kundli. You do not need to improve it. If you work on your thoughts, behaviour and speech then there will be improvement in your Janam Kundli automatically. Clear, very clear..?? Very Nice! First of all understand this.

Narayan Narayan Didi, my name is Amit Dalal and I am a final year Computer Engineering student from SVKM Mukesh Patel.

Question: My question is, why are we born in such a family in which we are unable to fit, what is the karma in life?

Didi:- You have said that why were we born in such a house or in such a family where we do not fit..?? First of all we have to understand that we have taken birth on this earth to bring happiness to others, to give comfort to others. If you do not get the comfort and happiness that you want, then you feel that I do not fit in this house. Till the time **I want, I want, I want** this feeling will remain, happiness is going to stay

away from you. **What comfort can I give to those who live with me, what happiness can I give them**, when your focus is on that and when you start giving, then the law of nature is this - "**whatever you give you receive."** First you have to give, first the seed has to be sown, then you get the fruits. You don't get it directly. When you start giving comfort and happiness to those with whom you live, what will be the by-product..? All that will keep coming to you. Then you will repeatedly say that I want to be born in this family only.

Raj Didi further said, what is karma?

The simple answer is "whatever you give, you receive." If you want good, you want comfort, you want happiness, you want peace, then you have to give. Whatever house you were born in, you were born to give happiness to others, it is a different thing that its by-product will come back to you in the form of happiness but first you have to give and when you start giving, you will automatically become fit and create such a space that you will enjoy. Clear..?? Are you able to understand..?? Question: How does the sadhana ofwritten Ram Ram help..??

Raj Didi said that if you learn how to do it, then you will understand how the Ram Ram written sadhana will help you. We have a Ram Ram book available at the NRSP centre . Whatever you want in your life or you want to change your nature or you have a wish, you have to keep saying it. Whether you say it in your mind or say it loudly. I have achieved this thing, or I have achieved this, Narayan thank you. You have to say this statement and keep writing Ram Ram.. See how it works - whatever your wish is, it is not written in your destiny, but you want it. So as you keep saying it and keep writing Ram Ram. By writing Ram Ram, whatever is written in your destiny will get erased and whatever you want to get in your life will arrive in your destiny. All of you are familiar with the book for writing Ram Ram, it must be there, if you are NRSP then it is compulsory. Even if you write just one line, even if you write Ram only once in 24 hours, only one time, you have to write it. Even if you write Ram only once in the whole day, it will be fine. Is it clear?

Question:- Didi, my name is Shravani Jadhav and I am a Masters Student in Bio Info Matrix Field. My question is – how do we deal with the negative environment

at work or home? What measures can we take to improve the situation ?

Didi:- You see negativity at home and wherever you go outside, you see negativity there too. You see blackness at home as well as blackness outside, so in such a situation you have to change your glasses. So first you have to introspect that what are my thoughts, my behaviour and my speech due to which I am feeling negativity both at home and outside. So first of all you balance yourself, especially your speech. Our entire focus should be on speech only. Thoughts run in our mind, words come out of our mouth and our action is done by our body. In between is speech, it balances everything, your thoughts and your actions as well. Focus on the kind of words you are using. You are speaking loudly, you are speaking words full of unrest. As soon as you balance your speech, positive words will come out, your negativity will automatically reduce. First, you are responsible for that. Second, you worked on it, even after this there is negativity in the house and there is negativity outside as well, so what can I do to remove this?

For example: Like we say that there is a lot of stuff scattered in the house, then if you start picking up the stuff with the thought that at least I will pick up my stuff and keep it, then other people will also slowly start picking up their stuff after seeing you. If it starts with you, then what can I contribute to remove this negativity..?? We have to focus on ourselves and then put it into action. You will find that gradually changes are taking place inside and outside the home as well. Clear..??This is a question-answer session.

Question: Shailaja Sarawagi. I am a Chartered Accountant and a Corporate Banker.

Didi, my question is that we participate in the prayers of Brahma Muhurta every day, we also do all the sadhanas that you tell us, yet sometimes we miss the sadhana of our thoughts, speech and behaviour, and how does the written sadhana of Ram-Ram help us?

Didi: First, we are very happy that even at this young age, you people attend the sadhana of Brahma Muhurta, I am very very happy. Waking up in the morning and attending the sadhana from 4:30 am to 5:15 am is a very big achievement.

Second, I am happy that you people have realized that we need to work on our

thoughts, speech and behaviour. This is the effect of these prayers, otherwise whatever you say in your wish, that I am right, you people feel the same. The language you speak, the actions you do, everything is right. You realize that we need to work on our thoughts, speech and behaviour is a big achievement for me.

First achievement – you people attend the Brahm Muhurta Sadhna. Second – you realize that we have to work on this. We all will clap for you, give you a standing ovation to show that you are accepting this.

Third – When you attend Brahm Muhurta Sadhna, prayers, listen to confessions, what do they say in the beginning that we made these mistakes when we were not connected to your Satsang. After joining Satsang, when we heard this, we realized that we had indeed made these mistakes. They had made those mistakes when they did not listen to Satsang, but you people have heard Satsang that what are the consequences of which things, what has to be paid, what will be the result, you have already heard all this. Suppose even then you are not able to follow these things, then you have to do one thing. Take a blank notebook, two pages left right ok. You must write your thoughts, behaviour, speech. These are all those things which need improvement but you are not doing it. If this continues, my behaviour remains the same, my language remains the same, my actions remain the same, then after 5 years I will also raise my hand for confession. Do you want to sit in that category...?? On the right side page you have to write.

On the right side page, you have to write that I have brought about these changes in my nature and behaviour. Where will I stand with my hand raised after 5 years...?? Jackpot participants also raise their hands, do you know..?? That we have done so much work and today we have achieved so many things. After 5 years, where will you be, this is your choice. In which category you want to stand, confession or jackpot, this is your choice. They did not know, so they made mistakes, but you people already know everything.

Raj Didi further said that now see how to work on this. Mostly it happens that we react very quickly.

Thought- This is silent, what goes on here, the people in front do not know, but everything is known from the words and actions. If you sit quietly at one place and

count the things on which I react and later regret or regret that I should not have said this or should not have done this. Those are only two, three, four situations, the list will not be very long. Father said this and I reacted, mother said this and I said that, brother said that, sister said that. These are the family members with whom you live and who live with you, they are not outsiders, you have equal awareness that you have to give a response. Only at home you have a choice. You react to two, three, four situations in front of family members and later you also feel that I should not have done this. What do you have to do in that? You have to close your eyes and see that situation, visualize it because the same situation comes again and again, you react again and again and you feel again and again that I should not have done this. You have to close your eyes and see that again mummy said this, again papa said this and then I said this instead of that this time when this happens, they will say then I will respond in this way, or my response will be this. Repeatedly give a message to your mind. This will be my response, this will be my response. Next time whatever situation comes, they will say their way but the **no** that you used to say earlier, now your **yes** will come out and after that you will feel good because you are never going to feel good by reacting, then you go and say sorry five times, it doesn't matter. Isn't it? After these whatever benefits you will get come will in the system. Because we are human beings and it is our nature, it is the nature of humans that we see benefit in certain things, we see profit, we catch that

Youth Desk

Kumbh means pot!

Our body is also a pot. As long as there is life, it floats in the ocean of the world. As soon as the soul leaves this pot, it becomes lifeless and its ability to float also goes away.

That is why when the death rites are performed, there is a custom of breaking a pot filled with water. This is a symbolic ritual.

The water in the form of life again merges into the universe.

Now let us come to the hottest topic - Maha Kumbh which is going on these days in the holy city of Prayagraj in Uttar Pradesh.

This festival comes once in twelve years. This festival, which comes on the holy occasion of Makar Sankranti, has been a part of our culture since ancient times.

It is organized every 12 years at four places Haridwar, Prayagraj (Allahabad), Ujjain and Nashik. Kumbh Mela is organized because it is associated with the mythological story of Amrit Kalash, astronomical events and many other religious beliefs.

The purpose of Kumbh Mela is to provide an opportunity to the devotees for self-purification. It is believed that bathing at these places during Kumbh Mela destroys all sins and one attains salvation. **Bathing at the confluence of Ganga, Yamuna and invisible Saraswati during Kumbh Mela destroys sins and purifies the soul.** This fair is the meeting point of saints, gurus and devotees, where knowledge, devotion and service are exchanged.

Kumbh Mela is the biggest fair in the world in itself. The whole world is amazed at how such a big event is possible where all the arrangements for arrival, food, drink and accommodation are made without any estimation.

This festival has religious importance but along with this, the arrival of knowledgeable people provides opportunities for increasing knowledge, one gets acquainted with the costumes and traditions of different states and at the same time the whole of India is unified on such a occasion.

Children's Desk

Team Satyug decided that this time we would write about Kumbh Mela, which is trending at present in India. The social media, digital media, electronic media, and the print media have so much to say about the ongoing Kumbh mela in Prayagraj.

What is Kumbh Mela?

Kumbh Mela is a very special festival in India where millions of people come together to celebrate the holy dip and pray .

Why is it called Kumbh?

"Kumbh" means "pot" in Sanskrit. According to legend, the gods and demons fought over a magical pot of nectar, which gave eternal life.

To safeguard the Kumbh from the demons, Lord Vishnu, disguised as Mohini, seized the pot and fled. Along his journey, a few drops of the nectar spilt at four places: Prayagraj, Haridwar, Ujjain, and Nashik, making them holy sites for the Kumbh Mela These four sites became sacred, hosting the Kumbh Mela on a rotating basis. The Kumbh Mela follows a 12-year cycle based on the celestial positions of the Sun, Moon, and Jupiter.

The Maha Kumbh falks ever 144 years and it falls only in Prayagraj.

What happens at Kumbh Mela?

1. Holy Bath: People take a dip in the sacred rivers, believing it will wash away their sins and bring good luck.

2. Prayers and Worship: Devotees pray, sing, and perform rituals to honour the gods and goddesses.

3. Processions and Parades: Colourful processions and parades take place, featuring elaborate costumes, music, and dancing.

4. Food and Fun: Delicious food, games, and activities are available for everyone to enjoy.

Why is Kumbh Mela important?

1. Spiritual Significance: Kumbh Mela is a time for spiritual growth, self-

reflection, and connection with the divine. The naga Sadhus, the siddhis come to the Kumbh to seek liberation.

2. Cultural Heritage: It's a celebration of India's rich cultural heritage and traditions.

3. Community Bonding: People from all walks of life come together, promoting unity, love, and harmony.

4. The Maha Kumbh is the largest human gathering in the world!

5. The Kumb happens every 12 years, and each time, it's held at a different location. The Ardh Kumb happens every 6 months and the MahaKumbh in 144years.

6. The festival is so big that it can be seen from space!

All the religious heads from the various spiritual organisations have their own Akhadas or tents, facilitating their bhaktas when they come for the Kumbh snan.

Why is the Kumbh significant?

As beautifully explained by

Sadguru :-

When we are in stress or after a tiring day, a shower rejuvenates us. That is the power of water. Similarly, the Kumbh helps to purify the soul.

As S**atguru**quotes, we must all visit the Kumbh once because itis one in a lifetime experience and experience magic.

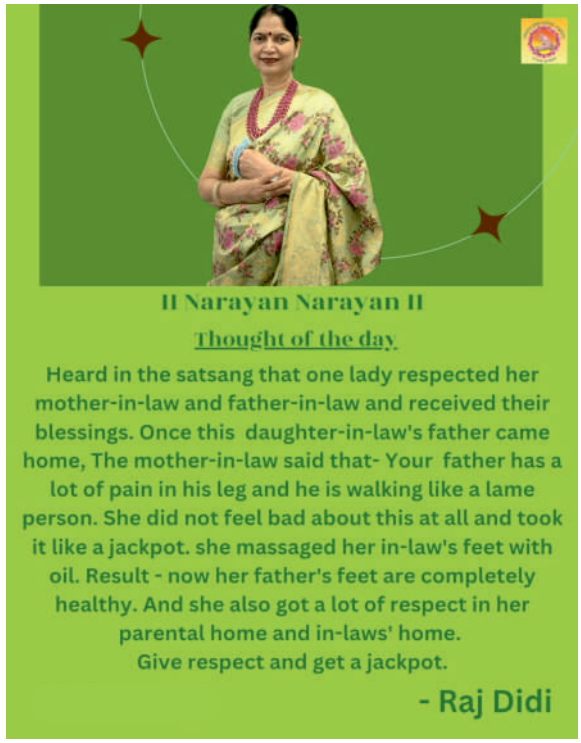

Under The Guidance of Rajdidi

In this column of Satyug, we present confessions which people made in the online Narayan Bhawan. They reformed themselves and became entitled to a seven star life. Some such confessions and commitments:-

Disrespected food

Earlier, I used to leave a lot in my plate. Before joining NRSP, I did not value food. Food would remain left over, I would cook more, then I would have to say Narayan Narayan, I would eat more than required. Quantity. Result - I am unwell. Please forgive me.

Kicked out of the house

My mother and I had taken money from the market on interest without telling anyone in the house, and we are not able to repay it, due to which father, in anger, has thrown us out of the house. We seek forgiveness in Narayan Bhawan for lying.

Nature repays

My sister is suffering from heart disease and is completely bedridden. After joining Narayan Reiki SatsangParivar she is realizing her mistake. Many years ago when she used to live in a rented house, the landlady, who was healthy earlier, fell victim to some disease. Earlier when she used to move around, my sister used to go and talk to her, visit her but when the landlady became bedridden, my sister used to get very annoyed and would not go and sit near her. Now the result is that my sister is also completely bedridden and no member of the family comes and sits near her, she keeps calling out. She apologizes for this.

Fruit of Karma

My husband used to abuse me a lot, so I used to be very rude to my mother-in-law in anger, I have even grabbed her by her throat. Now my Mother-in-law has gone to Narayan Dham. Result- I have all the diseases like BP, diabetes, thyroid, prosperity has stopped from all four directions. I apologize in Narayan Bhawan.

Honesty

I had sent some goods through the porter, and had given him some extra amount, as you say. After a few days, I again sent some goods through him. I had asked my staff to make the payment to him, by mistake the payment was made twice. When I called him, he honestly returned the extra amount.

Discussed the property of mother-in-law and father-in-law

Our elder brother and sister-in-law had kept the property of mother-in-law and father-in-law worth crores with themselves, when we had given our power of attorney in their name. We did not fight with them but discussed this matter very exaggeratedly. The result of this is that our business which was going very well, now my husband told me that we have a loan of 26 crores. Didi, please get me a pardon in Narayan Bhawan to discuss this.

Follow the path shown by Didi, let go of the greed for property

My father and mother left behind property worth crores, for which my siblings are in altercations. During counselling with you, you told me that we should not fight and get anything. I have told my siblings that I do not want to get into this Narayan situation of yours. Since then, I have a lot of peace in my mind, pure thoughts come and my husband's business has grown four times, that too in an environment full of love, respect, faith and care. Many thanks for your guidance.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Mahesh Kumar Heda on hisBirthday (9th January) for aseven star life blessed with good health, wealth, peace, prosperity and happiness.

Inspirational Memoirs

卐

The Curse

The Kumbh Mela is no less than a boon for the world, but the story of the origin of Kumbh also has the curse of a sage and that is Maharishi Durvasa. According to the story, Maharishi Durvasa had given a divine garland to Devraj Indra. Indra, who was full of pride due to being the king of the gods, placed that garland on the head of his Airavat elephant. The garland fell from Airavat's head and he trampled the garland with his feet. Maharishi Durvasa considered this as his insult and cursed Indra in anger. This caused an uproar in the whole world. With the grace of Lord Vishnu, Sagar Manthan was organized, from which Mata Lakshmi and Amrit came out. In the dispute between the gods and demons, some drops of Amrit fell on the earth, due to which the tradition of Kumbh Mela started. The curse of Maharishi Durvasa was also a decisive event behind the Kumbh Mela.

Kadru and Vinata

Prajapati Daksha's two daughters Kadru and Vinatawere married to sage Kashyap. Once they had a dispute whether the horse of the Sun was black or white. The bet was- whoever would lie would serve the other. It was decided that the sisters would go to find out the next day. Kadru ordered her sons to go and wrap themselves around the horse's tail so that its tail would appear black. The sisters went again together and Vinata lost the bet because the horses appeared black and she had to serve Kadru. A few days later, Vinata's son Garuda was born. Along with Vinata, Garuda also had to serve his snake sons. When Garuda asked for freedom from this slavery of his and his mother, the snakes said that if he brought the Amrit Kumbh from Nagaloka, he would be freed from slavery. When Garuda left for Nagaloka, Vasuki informed Indra. Indra attacked Garuda four times and the nectar of Kumbha spilled at the four famous places, marking the beginning of the Kumbh festival.

Sagar Manthan

Sagar Manthan was a tug o war between the Gods and the Asuras. 14 things were obtained from Samudra Manthan, which were divided between the Gods and

Asuras. But in the end, a conflict started between the two over the Amrit that came out. Due to which some drops of Amrit fell on the earth. Wherever Amrit spilled, Kumbh Mela started being organized there.

Ganga, the Purifier

Once a sage thought that if people go to wash their sins in Ganga, then it means that all the sins will get absorbed in Ganga and Ganga will become sinful!

Now he did penance to know, where does the sin go?

As a result of doing penance, the Gods appeared, the sage asked that Lord, where does the sin go that are washed in Ganga?

God said, let's ask Ganga, both the people went to Ganga and said, "O Ganga! If people wash their sins at your place, then it means you are also a sinner!"

Ganga said, "Why should I be a sinner, I take all the sins and offer them to the ocean!"

Now they went to the ocean, "O ocean! If Ganga offers her sins to you, then it means you are also a sinner!"

The ocean said, "Why should I be a sinner, I take all the sins and convert them into steam and make clouds!"

Now they went to the clouds and said "O clouds! The oceans convert sins into steam and make clouds, so it means that you become a sinner. The clouds said "Why am I a sinner? I send all the sins back to the earth in form of rain, which produces food, which is eaten by humans. The mentality of humans is formed according to the mental state with which the food is grown and the attitude with which it is obtained, the mental state in which it is eaten!"

The attitude (earning) with which the food is obtained and the mental state in which it is eaten, the thoughts of humans are formed according to that! That is why one should always eat food in a meditative and calm state and at least the money with which the food is bought should be the money of honesty and hard work!*

For example-

Bhishma Pitamah was waiting for the arrival of Shukla paksha to give up his life while lying on the bed of arrows. On the orders of Lord Krishna, Yudhishthira used to

take ethical knowledge from him every day. Draupadi never went to meet Bhishma which pained him a lot. Shri Krishna had sensed it. He told Yudhishthira that one should go to meet the ancestors who are engaged in meditation waiting for the end with the family. A family is not complete without a wife. Understanding the hint, Yudhishthira insisted and took Draupadi along with him. The grandfather started giving them moral knowledge. Draupadi was listening quietly with frustration. Suddenly Draupadi started laughing. Bhishma said - Daughter, I know the reason for your laughter. Bhishma told Draupadi hesitating - Daughter, you should ask about your dilemma. I will get peace. Draupadi said - Lord Shri Krishna himself says that there is no one who knows ethics like Bhishma, but where did your knowledge disappear when your daughter-in-law was being disrobed in front of you? Bhishma said - I was waiting for this question. As is the food, so is the mind. I was eating the food of an unrighteous person like Duryodhana. That food had dulled my intellect. I had lost the ability to take the right decisions.

Food is transported by our blood. Arjun's arrows have slowly removed that blood from my body. Now only Ganga Putra Bhishma is left in this body. Only a part of the mother who purifies everyone is there, that is why I am able to talk about ethics.

Consider Bhishma's words as an unshakable truth. If you maintain your family with money earned through immorality or by torturing someone, then it corrupts the intellect of the family. The happiness that comes from it is momentary but in the long run it becomes the cause of sorrow. If someone is flourishing in front of you even after earning money through wrong means, then understand that those are the accumulated merits of his previous life which he is swallowing. As soon as those merits will end, his bad days will soon begin.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Banwarilal ji Taparia on his Birthday (29th January) for a seven star life blessed with good health, wealyh, peace, prosperity and happiness.

GOLDEN SIX

1) Prayer -Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

2) Energize Vaults - Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

3) Shanti Kalash Meditation – Visualize a Shanti Kalash (Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra" Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times."

4) Value Addition - Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

5) Energize Dining Table/ Office table - Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

6) Sun Rays Meditation - Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN . STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com